B.A. Part-I Hons session 2019 - 20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

अप्रगाढ़ अवस्था या सुषुप्तावस्था (Latency Stage) में शेष पैज लैंगिकता को वे पूर्णतः भूल नहीं जाते हैं लेकिन लैंगिकता दमित सी रहती है। माता-पिता के प्रति स्नेह का स्थान भक्ति और सम्मान लेने लगता है और उनके लिए प्राथमिक पक्षपात कुछ कम हो जाता है। माता-पिता की कुछ आलोचना भी प्रारम्भ हो जाती है और कभी-कभी उनकी आज्ञा की अवहेलना भी की जाती है।

5. जननेन्द्रियावस्था (Genital stage) यह अवस्था 12 वर्ष से लेकर 20 वर्ष की आयु तक बनी रहती है। इस अवस्था में तारुण्यागमन (on set of puberty) होता है और लैंगिकता फिर से जग उठती है। लिंग की प्रधानता तो रहती है पर लड़के-लड़कियाँ लिंग को जननेन्द्रिय के रूप में देखने लगते हैं। हस्तमैथुन, समलिंगी बच्चों से प्रेम, कल्पना का बाहुल्य, मन गढ़न्त कहानियों में विशेष अभिरुचि और इन कहानियों में लिंग का विषय लाना इस अवस्था की प्रधान विशेषताएं होती हैं। समाज इस अवस्था के लड़के-लड़कियों को अलग रखता है इसलिए उनका प्रेम समलिंगी बच्चों से ही सम्भव होता है। किशोरावस्था तो शारीरिक एवं मानसिक अशान्ति एवं तनाव की अवस्था है। शारीरिक विकास तेजी से होता है और लैंगिक उत्तेजना प्रबल होती जाती है। इसी कारण लैंगिकता कभी-कभी विकृत रूप धारण कर लेता है जिस लड़की से लड़के का प्रेम हो जाता है उसे वह प्यार मारता है और लज्जित करना चाहता है।

किशोरावस्था में जब भी लड़के-लड़कियाँ अकेले उदास या पराजित अनुभव करते हैं तो हस्त-मैथुन में अपनी सन्तुष्टि ढूढते हैं। इसलिए उन्हें

Scanned with CamScanner

डॉटना और भी हानिकारक होता है Homosexuality (समजाति मैथुन) का आधार भी कुछ अकेलापन तथा स्नेहहीनता आदि होता है। घर पर स्नेह न पाने से जहाँ कहीं भी स्नेह मिलता है किशोर उस तरफ झुक जाता है। इस स्नेह में लैंगिकता का अंश आरम्भ में तो बिलकुल नहीं होता है। स्नेह की भूख, भावुकता और आकर्षण ही इसकी प्रेरणा होती है।

किशोरावस्था में गुप्तांगों के कार्य में विशेष रुचि ली जाती है। लड़के-लड़कियाँ जननेन्द्रियों के वास्तविक प्रयोजन और महत्व को समझने लगते हैं। उनकी प्रेम कल्पनाएँ यथार्थ की ओर अग्रसर होती है। गन्दे मजाक एवं कहानियाँ कही सुनी जाती है और इस तरह पारिवारिक जीवन की तैयारी और प्रशिक्षण प्रारम्भ हो जाता है।

धीरे-धीरे लड़कियाँ अपना स्त्रीत्व स्वीकार करने लगती हैं। वे अपनी आतंक जमाने की प्रवृत्ति को छोड़कर संकोच और लज्जा का आश्रय लेती है। दोनों अपनी सजधज के लिये अधिक चिन्तित रहते हैं और उसपर अधिक समय, श्रम तथा धन खर्च करते हैं। लड़कियों के लिये रजस्वला होने का अनुभव बड़ा संकटमय होता है और यदि उन्हें उचित पथ प्रदर्शन न मिले तो उनके अन्दर दोषी भावना (Guilt feeling) जन्म लेता है। अब युवक-युवतियाँ समलिंगी प्रेम को त्यागकर विपरीत लिंग में रुचि लेने लगते है और निकट भविष्य मे पारिवारिक जीवन के निर्माण की कल्पनाएँ करने लगते हैं। समाज भी ऐसे युवक-युवतियों का शादी-विवाह करके स्वस्थ लैंगिक जीवन व्यतीत करने के लिए सामाजिक मान्यता प्रदान कर देता है।

Scanned with CamScanner